श्री सीता जन्म प्रकाश
स्वामी श्रीमद् रामहर्षणदास जी महाराज
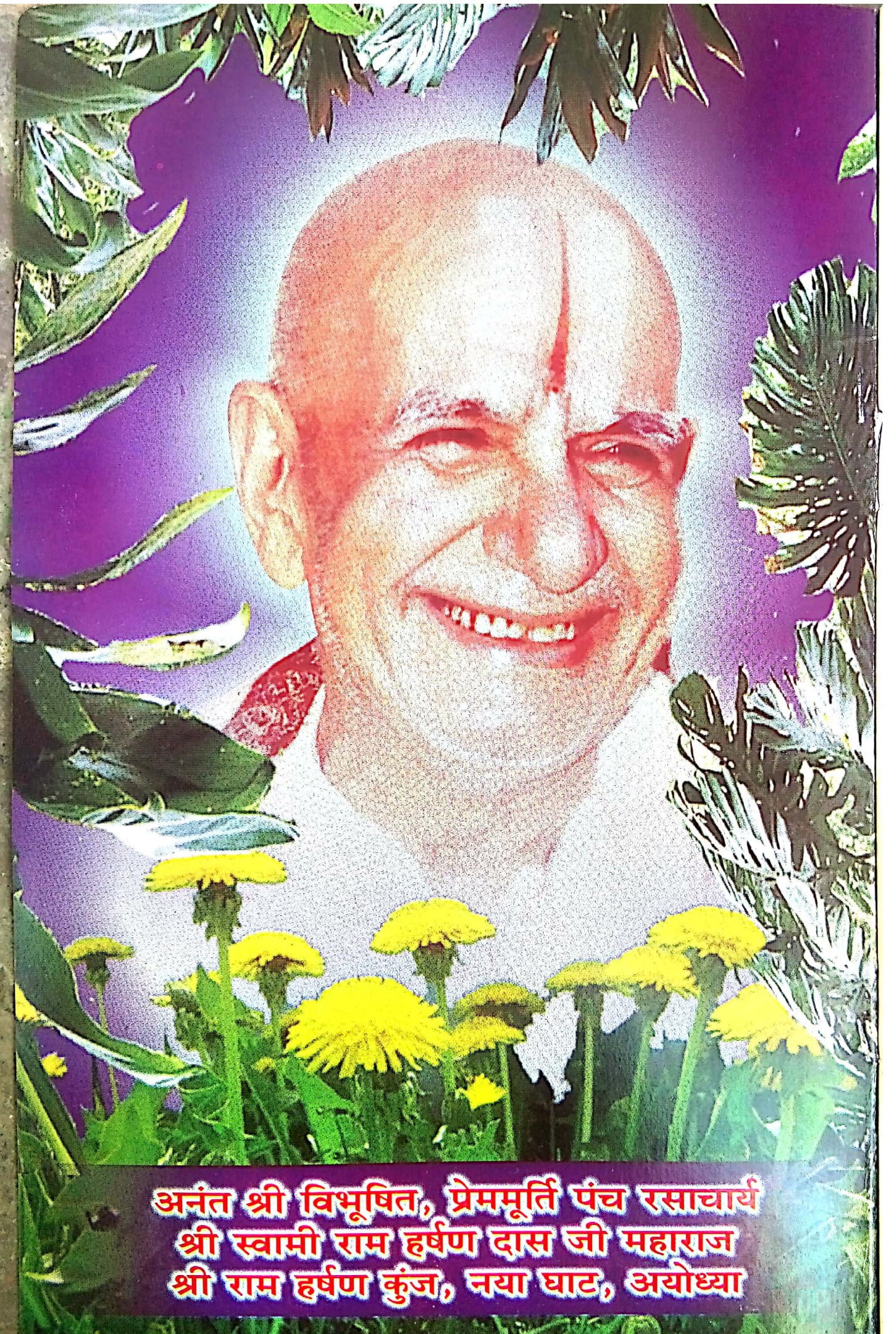
अनंत श्री विभूषित, प्रेममूर्ति पंच रसाचार्य
श्री स्वामी राम हर्षण दास जी महाराज
श्री राम हर्षण कुंज, नया घाट, अयोध्या

॥ श्री सीतारामचन्द्राभ्यांनमः ॥

श्री सीता जन्म प्रकाश

अनन्त श्री विभूषित श्री मद्रामानन्दीय द्वारा प्रतिष्ठापनाचार्य वर्य स्वामिपाद

श्रीमद् योगानन्दाचार्य

वंशावतंश निखिल सन्तवृन्द वन्दित पाद पद्याशेष शास्त्र पारङ्गत परमहंस
परिव्राजकाचार्य सिद्ध पद प्रतिष्ठित जगदुद्धारक पण्डित प्रवर

श्रीमद् रामबल्लभा शरण महाभाग

चरणाश्रित अखिल वेद वेदाङ्ग निष्णात विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त
प्रतिष्ठापनाचार्य पूज्य पाद

श्रीमद् अखिलेश्वरदास जी महाराज

चरणकमलचञ्चरीकेण प्रेममूर्ति पञ्चरसाचार्येण

श्रीमद् रामहर्षण दास

स्वामिनाप्रणीतं

◆ न्यौछावर : २० रु. मात्र

◆ द्वितीय आवृति : १०००

◆ प्रकाशक :
श्री राम हर्षण सेवा संस्थान
परिक्रमा मार्ग, नया घाट
श्री अयोध्या जी
(उ. प्र.)

◆ द्वितीय प्रकाशन तिथि :
माघ शीर्ष शुक्ल २
श्रीसीताराम विवाहोत्सव
समैया, पौड़ी धाम, सतना
२००९

◆ मुद्रक :
शोभा प्रिंटिंग प्रेस
न्यू बस स्टैण्ड के पास, नदीपार
कटनी (म. प्र.)
दूरभाष : ०७६२२-४०८३६८

|| ॐ नमः सीतारामाभ्यां||

|| श्रीमते वीर हनुमते नमः ||

|| ॐ गुं गुरवे नमः ||

दो. राम सिया लक्ष्मण भरत, रिपुहन हनुमत वीर ।
आपन जन मोहि जानिके, कृपा करहु मति धीर।। १ क।।

गुरु पद पद्म पराग सिर, धरि के करौं प्रणाम ।
सीता जन्म प्रकाश लिखि, सेवन चहत गुलाम ।। १ख।।

कृपासिन्धु करुणायतन, तुम बिन उर न उजास।
प्रभु प्रकाश को पाइके, सीता जन्म प्रकाश ।। १ग।।

विश्व विदित इक तिरहुत देशा। परम रम्य पावन प्रिय वेषा।।
मिथि निर्मित तहँ मिथिला नगरी। लौटे मुक्ति जहाँ प्रति डगरी।।
त्रय दश तहाँ आवरण तासू। दिवि दुर्लभ जहँ भोग विलासू।।
कंचन वन आदिक चौबीसा। वन सोहत सुन्दर चहुँ दीशा।।
सर सरि निर्झर पुण्य जलाशय। पंकज सहित सोह पुर पासय।।
गुंजन करहिं मधुप के वृन्दा। प्रमुदित पियहिं मधुर मकरन्दा।।
जल कुक्कुट वक सारस हंसा। कलरव करत शकुन अवतंशा।।
शुक पिक पपिहा विहरत मोरा। वन उपवन वाटिक कर शोरा।।
जहँ तहँ बैठे भवन सुहावत। अन्य शकुन औ प्रिय पाराबत।।
शीतल मन्द सुगन्ध बयारी। चलति सदा सुख वर्धन वारी।।

दो. सब प्रकार सुन्दर पुरी, पुरियन की सिरमौर।
अपने विभव विलास से, लजवति त्रिभुवन ठौर।। २ ।।

चौ. शीलकेतु तहँ वसै नरेशा। वेद विदित नृप नखत दिनेशा॥
परम सती मिथिलाधिप रानी। नाम सुनैना शास्त्र बखानी॥
सहज विरागी ज्ञान अगारा। भक्ति भाव को भवन भुआरा॥
जाके ज्ञान भानु को पाई। भव निशि नशी न देत दिखाई॥
वचन किरण मुनि पंकज विकसे। सुरभितसुखदसबहिंदिशिनिकसे॥
यागबलिक गुरू ज्ञान प्रदाता। भे निमि वंशिन के सुखदाता॥
जासु प्रसाद भवन बसि राजा। भयो सकल योगिन सिरताजा॥
शुक से मुनि जहँ ज्ञान को पाये। तासु ज्ञान को वरणि सुनाये॥

दो. अष्ट सचिव सब विधि कुशल, जानहिंसबै यथार्थ।
नीति प्रीति पहिचानि सत, स्वारथ औ परमार्थ॥ ३ ॥

सतानन्द उपुरोहित जिनके। कर्म सफलता कहै को तिनके॥
अनुज जासु कुशकेतु कहायो। परम प्रीति राखत मन भायो॥
एक पुत्र लक्ष्मीनिधि भीना। रूप शील गुण ज्ञान प्रवीना॥
सुन्दर सब समाज नृप पाई। प्रमुदित प्रजा पाल सुत-ताँई॥
पुरवासी सब विरुज शरीरा। धर्मशील ज्ञानी मतिधीरा॥
संत स्वभाव गुणन के गेहा। सब पर नृप कर सहज सनेहा॥
तिन समान सुन्दर नहिं देवा। औरन कथा कहै को भेवा॥
नीच कुलहुंकी नारि अनूपा। रतिहिं लजावै अपने रूपा॥

छंद. लखि नारि नीचहुँ वंश की, रति सहित शचि शारद लजै।
तहँ रूप वैभव को कहै, लखि नरन मद कामहु तजै॥
धनि धाम संपति धनि पुरी, जेहिं देखि इन्द्र कुबेरहूँ।
लजिगर्वत्यागतसीहपुनि, जयकहतप्रमुदितहर्षहूँ॥१॥

सो. भाग न जाय बखान, जनकपुरी नर नारि के।
सुख दुर्लभ सुख सान, रहहिं निरत श्रुति मार्ग महँ॥४॥

दम्पति धर्माचरण सुहावा। बहु विदेह कर प्रगट प्रभावा॥
नृप निर्पेक्ष हीन संकल्पा। अच्युत अर्पित कर्म अनल्पा॥
बनि विदेह परमार्थ अनूपा। ब्रह्मवेत्त भो ब्रह्म स्वरूपा॥
अहंकार ममकार विहीना। अंतरमुखी वृत्ति गहि लीना॥
राजा नाम कियो चरितारथ। करत प्रजारंजन तजि स्वारथ॥
देश मात्र अघ होन न पावै। अघी पुत्रहूँ दण्ड को पावै॥
मृत्यु बँधी पुर बाहर सोवै। अमृतमयी पुरी सब जोवैं॥
वर्ण और आश्रम अनुहारी। श्रुति पथ निरत सकल नर नारी॥

दो. यहि विधि तिय सुत सचिव सह, गुरु आज्ञा अनुसार।
करहिंराज जस वेद विधि, निमिकुल वंश उदार॥ ५॥

विधि विधान अति ही बलवाना। जेहिं मधि छिप्यो जगत कल्याना॥
पहुँच्यो आय अवर्षण काला। कृषि बिनु सोह न धरा विशाला॥
प्रजा सशंकित देखि भुआरा। किय प्रबन्ध बहु भाँति उदारा॥
ठौरहिं ठौर जलाशय कीन्हें। ससि सिंचन हित जल बहु दीन्हे॥
जेहिं ते प्रजा न लहै कलेशा। दीन्ह द्रव्य बहु भाँति नरेशा॥
विप्र साधु गुरु सचिव बुलायी। महती सभा कीन्ह नृपराई॥
निश्चय भयो सभा मुख माहीं। वृष्टि हेतु हो यज्ञ उमाहीं॥
सादर सकल मुनिन बुलवाई। जन हित होवहि अवशि उपाई॥
यज्ञ भूमि सोधहिंमहराजा। निज कर करि हल कर्षण काजा॥
सबके हृदय महा विश्वासा। पूजिय सबकी सब विधि आशा॥
सुनतहिं भूप परम सुख पाये। बोले वचन सभहिं शिरनाये॥
आयसु अवशि करहुँ शिर राखी। होहिंसुखी सब उर अभिलाषी॥
सचिवहिं कह्यो बुझाय नृपाला। होय तयार बड़ो मखशाला॥

दो. यज्ञ साज सब साजिये, ऋषि मुनि सबहिं बुलाय।
करहिंतयारी सकल विधि, छिद्र न तनिक दिखाय॥ ६॥

लगेउ मास वैशाष सुहावन। शुक्ला नवमी सब विधि पावन॥
योग लग्न ग्रह सब अनुकूला। सब विधि सबहीं आनन्द मूला॥
गुरू निदेश शुभ समय भुआरा। चले थलहिं बजवाय नगारा॥
सोहत साथ सबहिं परिवारा। विप्र साधु गुरु सचिव उदारा॥
उत्सव होत विविध मग माहीं। पंच धुनी प्रिय श्रवण सुनाहीं॥
पहुँचे जाय यज्ञ थल जबहीं। माच्यो शोर जयति जय तबहीं॥
विविध भाँति के बाजत बाजा। मंगल गावहिं तियन समाजा॥
द्विज श्रुति बन्दी विरद उचारे। देत दुंदुभी सुमन को झारे॥
तेहिं अवसर दुई वृषभ सुहाये। आये सुभग शरीर सजाये॥
रवि सम तेज तिनहिं की जोरी। मुक्ता खचित झूल चित चोरी॥
बनेउ सुवर्ण केर हल खासा। अंग प्रत्यंगन सोह सुभाषा॥
नहे हलहिं मानहु युग नन्दी। सुख संवर्धन हित सुख कन्दी॥
गणपति गौरि गिरीश मनाई। लक्ष्मीपति इष्टहिं सिर नाई॥

दो. रत्न यष्टि निज कर लिये, भुँइ शोधन के काज।
हलहिं चलाये हर्ष हिय, हर्षण निमि महराज ॥७॥

शिव ब्रह्मादिक चढ़े विमाना। देखहिं यज्ञ विभव सुख साना॥
जय जय जनक कहहिं नर नारी। भूमि गगन भूपति गुण गारी॥
रस रस हलहिं चलावत भूपा। मनहु खोज निज निधी अनूपा॥
रुक्यो यकायक लाँगल तबहीं। भूमि विवर भो देखे सबहीं॥
निकस्यो जग जग ज्योति विमाना। परम तेज शत भानु समाना॥
लिये शेष जेहिं अपने शीशा। सेवा रंग रँगे अहि-ईशा॥
तेहिं बिच स्वर्ण सिंहासन भारी। रत्न जटित सोहत सुखकारी॥
तापर ज्योति त्रिपादी राजति। छवि की खानि भली विधि भ्राजति॥
आदि शक्ति अह्लादिनि कहि के। वर्णत वेद जाहि गुण गहि के॥
अष्ट सखी चहुँ ओर विराजैं। विद्युत वर्णा सोउ भल भ्राजैं॥
छत्र चमर विंजन कोउ माला। लिये पान इत्रादि रसाला॥

छन्द–लै छत्र विंजन चमर कोउ, कोउ पान दर्पन लै खरीं।
भरि भाव सेवहिं प्रेम पगि, कोउ गंध लीन्हें कोउ छरी ॥
सुर सुमन वर्षहिं जयति कहि, प्रमुदित निशान बजावहीं।
महि व्योम माच्यो हर्ष हिय, विधि हरि हरहुँ सुख पावहीं ॥२॥

सो. स्तुति कीन सुहानि, सुर समूह भरि भक्ति उर।
हर्ष न जाय बखानि, अकथ अलौकिक बुद्धि पर ॥८॥

छन्द– जय जय अहलादिनि। शक्ति अनादिनि,प्रगटी भूमि विदारी॥
जय जयति कृपालुनि,परम दयालुनि। सकल जीव हितकारी॥
हर्षित नृप रानी, अमृतमानी। छवि की खानि निहारी॥
कनकोज्वल कमला, अंगनि अमला। मधुर मधुर मनहारी॥
वर वस्त्राभूषण, दिवि निर–दूषण। पहिरे प्राण पियारी॥
तन चर्चित चंदनि, सुरभित स्यंद्यनि। रती रमोमा वारी॥
कर विनय निहोरी, दोउ कर जोरी। मिथिलेश्वर सह नारी॥
सुनि देवि अँजोरी, स्तुति तोरी। केहि विधि करउँ अधारी॥
जेहि अंश ते माया, जग उपजाया। सहित त्रिदेव अपारी॥
तेहिं नयनन देखे, कृपा विशेषे। पूर्ण काम तोहि पारी॥
सुनि बचन सयानी, मन मुसुकानी। आनँद देन विचारी॥
कहि कथा सुनाई, पूर्व की भाई। पितृ सनेह सम्हारी॥
सुनि दंपति हर्षे, प्रेम प्रकर्षे। वाछल भाव भो भारी॥
लालनि तन लीजै, शिशु सुख दीजै। विनती विशद उचारी॥
पितु वाक को मानी, रोदन ठानी। बाल रूप द्रुत धारी॥
लखि सुन्दर बाला, भये निहाला। लीन्हे गोद मझारी ॥३॥

दो. महि–महि सुर–सुर संत हित, मानुषि रूप सुहाय।
हर्षण शक्ति अनादि जो, प्रगटी निमिकुल आय ॥९॥

सुनि शिशु रुदन सबहि सुख पाये। मैथिल प्रेम के सिन्धु समाये॥
नभ ते झरी सुमन की लागी। मुदित देवगण दुंदुभि दागी॥
जय-जय शोर मच्यो चहुँ ओरा। पूरि रहेव आनँद रस बोरा॥
सियहि अंक लै भवनहि आये। भूपित हृदय न हर्ष समाये॥
लागी बजन बधैया द्वारे। मंगल गीत नारि गण गा रे॥
तैसहिं घर-घर बजत बधावा। विविध भाँति नृप नगर सजावा॥
शतानंद उपरोहितहिं बुलाई। जात कर्म कीन्हेव नर राई॥
कनक धेनु मणि बसन अनाजा। दीन्ह बुलाय के विप्र समाजा॥

दो. दीन्हेव सर्वस दान नृप, प्रमुदित सुख न समाय।
जो पाये सोऊ दिये, अति उदारपन लाय॥१०॥

हय गय रथ भल भवन औ भूमी। निज-निज रुचि लहि सब सुख झूमी॥
घर-घर गली-गली जन्मोत्सव। मच्यो जनकपुर महा महोत्सव॥
मृग मद कुंकम दधि की कीचा। मची मार्ग महँ अतरन सींचा॥
पुर अरु व्योम शोर बहु होई। नृत्य गीत वर वाद्य समोई॥
वृन्द-वृन्द मिलि पुर की नारी। राजसदन कहँ चली सुखारी॥
कनक थार भरि मंगल द्रव्या। सोहहिं सिर लै कलस सुदिव्या॥
सोहिल गान करत पिकबयनी। पहुँचि गई जहँ मातु सुनयनी॥
निरखि ललिहिं अनुपम सुख पाई। पुनि-पुनि लखि-लखि लीन्ह बलाई॥

दो. करहिं निछावर आरती, रानी भाग को गाय।
नृत्यहिं नवल नवेलियाँ, नयन लाभ को पाय॥११॥

सुर मुनि नाग सनारिन आये। लखि जन्मोत्सव आनँद पाये॥
आनँद-आनँद-आनँद एका। छाय रह्यो पुर अरु जग देका॥
भानुहुँ भव को भान भुलाये। उत्सव देखे अति सुख पाये॥
तेहि ते दिवस भयो बहु भारी। प्रेम प्रमोद न कोउ निहारी॥
विधि हरि हरहुँ स्ववेष छिपाये। फिरहिं पुरी सुख सर्वस पाये॥

रती रमोमा अरू ब्रह्माणी। शची शारदा देवि सयानी॥
कपट नारि भल रूप बनाई। रानि सुनैना के ढिग आई॥
सियहिं देखि सब नृत्यन लागी। भाव भरी नव नेह में पागी॥

दो. मंगल स्तव कीन्ह पुनि, रक्षा मंत्र को पाठ।
पुनि-पुनि लीन्ह बलाईयाँ, रही न मन महँ गाँठ॥१२क॥

एक बार कैलास में, बैठे शिव भगवान।
अपने प्रभु आराध्य का, करत रहे हिय ध्यान॥१२ख॥

सीतारामहिं उर में ध्यावत। प्रेमवारि ते पूजि सोहावत॥
शंकर मानस अजिर विहारी। युगल स्वरूप हृदय के हारी॥
उर प्रदेश दै दर्शन दोऊ। शिवहिं प्रहर्षत सुन्दर सोऊ॥
सुन्दर वदन सोह शिव ऐसे। तन धरि शोभ शान्ति रस जैसे॥
तन विभूति अहि भूषण धारे। केहरि छाल के वसन सम्हारे॥
नील कण्ठ उर नर सिर हारा। आशिव वेष शिव रूप उदारा॥
कर त्रिशूल डमरू अति सोहे। चन्द्र मौलि सब के मन मोहे॥
सहित पार्षदन शिवा सुसेवति। सपनेहु शिव तजि मनहि न देवति॥

दो. ध्यान करत ही शम्भु के, हिय आई यह बात।
प्रगटीं मिथिला जग जननि, हौं दर्शन हित जात॥१३॥

धनि मिथिलेश अहहिं बड़ भागी। जगत जननि जन्मी जेहि लागी॥
अबहिं जनकपुर हौं चलि जावौं। जप तप जोग समाधि बिहावौं॥
करि उपाय कछु नृप गृह जावौं। सुता देखि निज नयन जुड़ावौं॥
यहि विधि करत मनोरथ नाना। चले करत शिव सिय गुण गाना॥

पद-हे मिथिलेश लाड़िली सीते कब करिहौ दृग सफल हमारे।

दो. इत विदेह गृह में भई, लीला एक अनूप।
रुदन लली जू ना तजै, विस्मित भे तब भूप॥१४॥

अम्ब सुनैना गोद उठाई। विविध भाँति पुत्रिहिं दुलराई॥
प्रेम मगन मन आनँद पागी। स्तन पान करावन लागी॥
किन्तु पान पय कियो न थोरी। रूदनहुँ तज्यो न नेक किशोरी॥
चिन्तित अम्ब भई मन माँहीं। बोली विकल वचन नृप पाँही॥

दो. नाथ न दीखै व्याधि कछु, लली देह में नेक ।
रूदन तऊ रूकतो नहीं, कियो उपाय अनेक ॥१५क॥

ललिहिं डीठ लागी अवशि, अस कछु परत जनाय।
व्याधि निवारण हेतु कोउ, तान्त्रिक लेहिं बुलाय॥१५ख॥

नाथ नाहिं अब कीजिय देरी। अतिशय विकल होत मति मेरी॥
तान्त्रिक सद्यहिं लेहु बुलाई। ललिहिं सुखी जो देय दिखाई॥
यह सुनि बाहर चले नरेशू। इत मिथिला आ गये महेशू॥
दरश लालची चतुर गँभीरा। गुदड़ी से निज ढके शरीरा॥
बने वृद्ध बीथिन में डोलैं। तान्त्रिक ढंग की बातें बोलैं॥

दो. ''तान्त्रिकोऽहं बहुकालीन: शिशूनां सर्व कष्टहा।
आगतो दैव योगेन, व्रजाम्यद्येव वै पुन:'' ॥१६॥

सुनि विज्ञापन पुर के लोगा। जाने मिल्यो भलो संजोगा॥
अपने-अपने शिशु लै आये। तान्त्रिक कहँ हर्षित दिखराये॥
प्रमुदित तान्त्रिक देखन लागे। सबकी व्याधि भगावन लागे॥
तान्त्रिक भये बहुत विख्याता। राजमहल महँ पहुँची बाता॥
सुनि मिथलेश बहुत हर्षाये। दक्ष दास इक वेगि बुलाये॥

दो. खोजत-खोजत सेवकहुँ, तान्त्रिक के ढिग आय।
करि प्रणाम सन्देश नृप, दीन्हो सकल सुनाय॥१७॥

सुनि मिथिलाधिप कर सन्देसू। आनँद मगन भये गिरिजेशू॥
जो विदेह हम कहँ बुलवाये। तौ सँग अबहिं चलौं हरषाये॥

अस कहि त्वरित चले तेहि संगा। तान्त्रिक जू मन भरे उमंगा॥
सद्य विदेह द्वार चलि आये। करि प्रणाम नृप गृह लै आये॥
तान्त्रिक देखि अम्ब हरषानी। चरण वन्दि बहु विधि सनमानी॥
दै आसन सादर बैठाई। ललिहिं लाइ तुरतहिं दिखराई॥

दो. दर्शन मात्रहिं के करत, तान्त्रिक भये विहाल।
है मूर्छित महि में परे, सके न निजहिं सँभाल॥१८॥

तान्त्रिक दशा मातु तब देखी। व्याकुल औरहुँ भई विशेषी॥
नृप सों कहन लगीं अकुलाई। कौन व्याधि गृह में धौं आई॥
जो क्षण में सब व्याधि भगावें। तेउ आजु महि परे दिखावें॥
कछु उपाय अब नाथ लगाइय। व्याधि उपाधि न जेहिं रहि जाइय॥
तान्त्रिक हेतु युक्ति कुछ कीजै। स्वस्थ कराइ जगत जस लीजै॥

दो. सुनत सुनैना के वचन, भोले भये सचेत।
खोलि नयन निरखन लगे, सियहिं सनेह समेत॥१६॥

बोली जननि सुनहु महराजू। गये रावरे गुण कहँ आजू॥
सबकी व्याधि विनासन वारे। फँसे तुमहुँ हा भवन हमारे॥
बचे आप इतनइ बड़भागा। महलहिं महँ नहिं जो तन त्यागा॥
अरी अम्ब गुरु कृपा प्रभाऊ। व्याधि मोहि व्यापइ नहिं काऊ॥

दो. व्याधि पीर से अबहिं तो, जाय रहे थे प्रान।
व्याधि न हमको व्यापती, करते मृषा बखान॥२०॥

सुनत सनैना की यों बानी। मन महँ मोद बहुत शिव मानी॥
मैया धनि-धनि भाव तुम्हारा। तोहि महँ गुण माधुर्य अपारा॥
जेहिं वश लखि मम ध्यान समाधी। शंका कियो समुझि बड़ व्याधी॥
बोली रानि सुनहु महराजू। कहा ध्यान कर यहि थल काजू॥
लली व्याधि नाशन हित आये। केहि हित यहाँ समाधि लगाये॥

दो. मइया व्याधि निवृत्ति हित, कीन्हो गुरु को ध्यान।
गुरु ने दीन्हो तन्त्र जो, सो मम सिर में जान ॥२१॥

अस कहि शिव परदक्षिना कीन्हें। लली चरण निज शिर रखि लीन्हैं॥
अरे कहा कीजै महराजू। तुम्हरे योग्य नाहिं यह काजू॥
बोले तान्त्रिक परम सुजाना। अम्ब याहि अनुचित क्यों जाना॥
ललिहिं प्रणाम कियो हौं नाहीं। तन्त्र विधी कीन्हों यहि पाहीं॥
मइया तन्त्र विधी जब होवै। बोलौ जनि नतु बाधा होवै॥
अस कहि शिव मन ही मन माहीं। स्तुति करत न सुखहिं समाहीं॥

छन्द-

जय जयति जय जनकात्मजे। करुणागरी दुखहारिणी॥
ब्रह्माण्ड कोटि अधीश्वरी। साकेत लोक विहारिणी॥
जग जननि जय जय जनक। तनये रूप शील उजागरी॥
पूर्णेन्दु भव्य वरानने। मुदित कृपा सुखसागरी॥
जय अमित भूषण भूषिते। हेमाङ्गि, प्रेम प्रदायिके॥
रघुचन्द मुख लुब्धा चकोरी। केलि रस अभिनायके॥
जगसृजनपालनप्रलयसर्वसु। होत जेहिं आधीन है॥
करियो कृपा की कोर अब। तुव शरण आयो दीन है ॥४॥

दो. सुनि स्तुति सिय लाड़िली, प्रमुदित भई विशेष।
अम्ब सुनैना से कहे, तब यों वचन महेश ॥२२॥

मइया देखु तन्त्र के द्वारा। व्याधि लली की मैं निरवारा॥
ताहि नयन भरि लेहु निहारी। सुखी सिया अब अहैं तुम्हारी॥
पुत्रिहिं प्रमुदित दम्पति देखी। हर्षित मन महँ भये विशेषी॥
तान्त्रिक कहँ पुनि पुनि शिर नाई। करहिं यथोचित बहुत बड़ाई॥
पुनि तान्त्रिक बोले मुसकाई। विदा देहु अब मोहिं हरषाई॥

बोले दम्पति सुनिये देवा। कर न सके हम कैसेहु सेवा॥
जो कछु चहहु माँगि प्रभु लेहू। कीजै सदा हमहिं पर नेहू॥
अनुचित बहुतहिं बैन उचारी। क्षमियों देव चूक भै भारी॥

दो. यहि विधि वचन विनीत सुनि, बोले मुदित महेश।
श्री गुरू कृपा कटाक्ष ते, मोहि न चाहु कछु लेश ॥२३॥

तान्त्रिक सिद्ध अहौं यह जानौ। गुरू प्रसाद जनि अचरज मानौ॥
लली व्याधि निज तन्त्र सहारे। हर्‌यो और नहिं चाह हमारे॥
चाहहु यदि कछु देन विदाई। लली वस्त्र देवहु हरषाई॥

दो. दियो तान्त्रिकहिं वस्त्र सों, तबहिं राउ मिथिलेश।
पाइ प्रसादी प्रेम सों, शिर धरि चले महेश ॥२४॥

जो सुख जानकी जन्म में भयऊ। सो सुख शेष न कहि सक अयऊ॥
मैं मतिमन्द कहौं तेहि काहा। सागर थाह कीट नहि लाहा॥
दिन दिन उत्सव अति अनुरागा। बढ़त पुरी महँ आनँद पागा॥
छठी भई पुनि बरहों कीना। विप्रन दान विविध विधि दीना॥
नामकरण को समय सु जानी। पहुँचे पुर नारद सुख सानी॥
सबहिं भाँति करि के सतकारा। पूजि प्रणमि कह वचन भुआरा॥
धरहिं नाम पुत्री कर आजू। बड़े भाग आये ऋषिराजू॥
ब्रह्म सुवन कह धन्य नृपाला। पाई सब विधि अनुपम बाला॥
यहि के नाम अनूप अनेका। कहहुँ नृपति जस मोहिं विवेका॥

छन्द–

यहि नाम अनुपम सुखद सुठि। नहिं अंत कोउ केहि विधि कहै॥
हल मुखहिं उपजी उर्वि ते। शीतल सुखद सुभगा महै॥
तेहिं हेतु तिहरी पुत्रि को। 'सीता' सबै जगती कही॥
गुण रूप शीला धर्म धुरि। हर्षण सुनहु नृपती सही ॥५॥

सो. यहि कर नाम उदार, सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं।
सबहिं अपनपौ वार, लहहिं लोक सुखकर परम ॥२५॥

सब लक्षण संपन्न कुमारी। कहि मुनि गये लोक हितकारी॥
यहि विधि दिवस जात नहिं जाने। जनक सुनैना सुख महँ साने॥
कहुँ पय पान करावति माता। कहुँ निरखति अति सुन्दर गाता॥
कबहुँ अंक कहुँ लेति उछंगा। सियहिं दुलारति भरी उमंगा॥
कबहुँ जननि पलना पौढ़ाई। प्यारति प्रेम पूर्ण उर लाई॥
थपथपाइ कहुँ लोरी गावति। सियहिं सोवावति कबहुँ जगावति॥
पाइ समय अन्न-प्रासन भयऊ। आनँद वर्धन मंगल मयऊ॥
नील झीन झिंगुली तन राजति। कनक अंग अनुपम भल भ्राजति॥
लघु लघु भूषण भव्य सुहावन। स्वर्ण मणिन मय मनहिं मोहावन॥
बहु प्रकार ते रानि सम्हारी। पुत्रिहिं पहिनाई सुख सारी॥
सहज अलक सुन्दर गभुआरी। सोह सिरहिं सुठि कारी कारी॥
फुहुर फुहुर पतरी छवि छावैं। छूटि कपोलन चित्त चोरावैं॥

दो. चितवनि मुसुकनि माधुरी, तोतरावनि सुख सार।
किलकनि मनहिं मोहावनी, तन द्युति अतिहिं पियार॥२६॥

दुइ दुइ दशन सुहावत नीके। दाड़िम उपमा लाजति फीके॥
शारद शशि शत विजित वरानन। रती रमोमा वाणि लजावन॥
कर पद मुख दृग कमल अरुणिमा। पद्म गंध वपु तेज तरणिमा॥
मधुर मधुर सुन्दर सुकुमारी। मूरति सुख सुषमा श्रृंगारी॥
सुख सरसति सिय आनँद धामा। देति जननि कहँ अति विश्रामा॥
जासु अंश अगणित गुणखानी। उपजहिं उमा रमा ब्रह्माणी॥
सृजन सँहारन अरु संरक्षण। भ्रू विलास से होवत तत्क्षण॥
सो सीता शिशु रूपहिं धारी। सोह मातु के अंक मझारी॥
कबहुँ घुटुरुअनि दौरति आँगन। कहुँ प्रतिबिम्ब लखति भ्रम भावन॥

दो. शकुन छाँह मणि अजिर लखि, होति चकित चित माहिं।
कबहुँ दौरि भय खाय सो, अम्ब अंग लिपटाहिं ॥२७॥

खम्भ पकरि कहुँ होवति ठाढ़ी। लरखरानि लखि प्रीति प्रगाढ़ी॥
लेति सुनैना गोद उठाई। झारि पोंछि चूमति दुलराई॥
कहुँ सिय चन्द्र लेन अरुझाई। मातु तासु मुख दर्श दिखाई॥
शशिहूँ ते लखि सुन्दर शोभा। सीता मन निज मुख महँ लोभा॥
भूली विधुहिं निहारन सीया। लीन अंक जननी कमनीया॥
मातु मनोरथ पूरण पायो। पगनि चलति लखि ललिहिं जुड़ायो॥
ठुमुकि ठुमुकि सिय आँगन धावति। छुन छुन बजत पैजनी भावति॥
भ्रात मुदित मन अनुजा केली। लोचन लखत सनेह सकेली॥
करत प्यार कहुँ देत खेलौना। कबहुँक कछुक पवावत भौना॥
जननि जनक की प्रीति अपारी। सोइ करहिं सिय रहै सुखारी॥
संसकार बालापन केरे। भये समय लहि सबहिं सुखेरे॥

दो. शिशु क्रीड़ा सिय की सुभग, रस वर्द्धनि सुख सारि।
पुरजन परिजन पाइ सुख, लखत निमेष निवारि ॥२८॥

जबहिं होत नित प्रात: काला। निज गृह ते आवहिं निमिबाला॥
श्रुति कीरति माण्डवि उर्मीला। चन्द्रकला सुभगा सुखशीला॥
चारुशिला सुषमा सुखकारी। हेमा क्षेमा प्रीति पसारी॥
पद्यम गंधिनी वर आरोहा। लक्षमणा सुन्दरि सुख दोहा॥
मदन मंजरी चित्रा चन्दा। वाणी आदिक विपुल सनन्दा॥
सिय मुख दर्शन को चित चेतू। रहहिं लोभानी तजि निज हेतू॥
सब पर कृपा ललिहुँ की रहई। अशन केलि सखि साथहिं चहई॥
खेलति खेल अलिन सँग माही। नित्य सिया सुख सिन्धु समाही॥

दो. विविध भाँति की केलि को, तियन सहित सुर वृन्द।
निरखहिं घन के ओट ते, पावहिं परमानन्द ॥२९॥

वर्षहिं सुमन निशान बजाई। जय जय जानकि जय जय गाई॥
खेलत खुनिश चिन्ह सिय वदना। कबहुँ न देखेउ कोउ सुख सदना॥
हारे खेलहुँ अलिन जिताई। सुख सानति करुणा उर छाई॥
अपनी जीत सकुचि सिर नाई। सखिन हार होवति दुखदाई॥
परिकर वृन्दन के मन भावति। बाल चरित आनँद वर्षावति॥
क्षमा दया कृप करुणा मूरति। जन अभिलाष भली विधि पूरति॥
करत केलि भोजन सुधि भूलै। सखिन संग उर के अनुकूलै॥
जननि बुझाय अंक निज लेई। झारि पोंछि पुनि भोजन देई॥

दो. कहुँ जननि कहुँ जनक सँग, कबहुँ भ्रात की गोद।
बैठि सिया भोजन करति, कबहुँ सखिन सँग मोद॥३०॥

बहु विधि बाल चरित सिय कीन्ही। पितृ भ्रात सखियन सुख दीन्ही॥
अति आनँदमय यहि विधि तेरे। जात दिवस निशि प्रीति के प्रेरे॥
समय समुझि गुरु कृपा निकेता। पहुँचे राजभवन चित चेता॥
विविध भेंट पूजा नृप दीन्हे। किय सतकार भाव भल कीन्हे॥
सीतहिं विद्यारंभ कराये। सेव समुझि मुनि सुखहिं समाये॥
सन्यासिन बनि शारद आई। अति सन्मान राजगृह पाई॥
प्रमुदित सियहिं पढ़ावन लागी। लहि कैंकर्य अधिक अनुरागी॥
अल्पकाल सब विद्या सीखी। जनक लाड़िली ज्ञान विशेषी॥
जेहिं बल ते बड़ विद्या माया। जीवहिं अमृत करै स्वभाया॥

दो. सोइ सत सीता पढ़ति गृह, कौतुक करति स्वभाय।
परिकर आनँद दायिनी, भक्ति प्रभाव जनाय॥३१॥

सद्गुण गेह सिया सुख सारी। गंग कीर्ति निमिकुल उजियारी॥
चन्द्रकला सम बाढ़ति नित्या। रूप उजागरि तेजादित्या॥
पुरजन परिजन प्रेम अमीता। सिय पर रहत सदा गुण गीता॥
सबहिं स्व पुत्रिहुँ ते बड़ मानैं। लोचन लखतउ रहत लोभानै॥

जेहिं पै दृष्टि परै कहुँ सिय की। सो कृतकृत्य होत सुख हिय की॥
यहिविधिकछुककालचलिगयऊ। आगिल चरित सुनहिं सुखमयऊ॥
जनक भवन महँ शंकर चापा। धरा रहा जेहिं परम प्रतापा॥
निमिकुल नृप तेहिं पूजत आये। प्रभु प्रसाद सुख सिन्धु समाये॥

दो. सोइ धनु पूजत भूपतिहुँ, सविधि सुभाव समाय।
नित्य-नित्य निष्काम मन, कुलरीतिहिं अपनाय॥३२॥

जनक प्रिया निज हाथन तेरे। धनु थल स्वच्छ करति प्रिय प्रेरे॥
एक दिवस मिथिलेश्वर नारी। फँसी रही कछु कार्य मझारी॥
सियहिं बुझाय कही मृदु बानी। सुनहु लली सुन्दर सुख खानी॥
नहिं अवकाश अहै मोहिं आजू। तेहिं ते लै निज सखिन समाजू॥
धनु थल स्वच्छ करहु तुम जाई। पूजन समय गयो नियराई॥
जननि वचन सुनि सिय सुखमानी। चली अलन लै अन्तर जानी॥
चाप समीप पहुँचि गति रोकी। कूड़ा कचरा पर्‍यो विलोकी॥
सहजहिं चितय सखिनि तन सीता। चौका करन चह्यो अति प्रीता॥

छन्द-

निज नयन निरखति नेह भरि। अलिगनन सिय सर्वेश्वरी॥
भरिभावसहजपिनाककोनिज। वाम कर लै तेहिं घरी॥
तृण जाल जो धनु तलहिं रह। करि साफ दक्षिण पाणि ते॥
पुनि धरणि महँ धरि धनुष को। बहु पूजि हर्ष विधान ते॥६॥

सो. आई मातु समीप, सिया सबन्ह सुखदायिनी।
निमिकुल ज्योति प्रदीप, कीन्हेउ कार्य अमानुषी॥३३॥

जेहिं विधि सिय शिव धनुष उठाई। स्वच्छ थलहिं करि पुनि पधराई॥
सो सब सखिगण वरणि सुनाई। सुनत सुनैना अचरज पाई॥
उत विदेह धनु पूजन हेता। गे धनु मन्दिर मोद समेता॥
दिव्य धनुष थल देखि नृपाला। मान्यो अचरज उर तेहिं काला॥

कौन उठाय के चाप महाना। साफ कियो कार्मुक को थाना॥
पूजन करि पुनि भवनहिं आये। समाचार सब तियहिं सुनाये॥
सत्य बात सिय सम्मुख रानी। दीन्ह बताय अचम्भौ मानी॥
सुनत जनक तेहिं महिमा भारी। जान्यो आदि शक्ति मम वारी॥
सुनि सत बात सकल पुरवासी। जाने सियहिं शक्ति अविनाशी॥

दो. समय पाय निज पतिहिं ते, कही सुनैना बात।
षट वर्षा मम बालिका, श्यामा सरिस दिखात ॥३४॥

कहेउ विदेह हमहुँ मन माहीं। सोचत इहै प्रिया दिन जाहीं॥
सिय अनुरूप वरहिं कहँ पाऊँ। नहि दिखात कहुँ ठाहर ठाऊँ॥
कन्या ते वर अधिक सुयोगा। चाहिय श्रुति कर सत्य नियोगा॥
जो पितु पुत्रिहिं नीच को देवै। दोष घटै जग अपजस लेवै॥
तेहिंते लली के लायक जबहीं। दूलह मिलै सनौ सुख तबहीं॥
जाय अबहिं शिव ध्यान लगाऊँ। लहि निदेश तब करउँ उपाऊ॥
बैठि सुआसन जनक भुआरा। धरेव ध्यान एकान्त अगारा॥
ध्यानहिं मँह शिव शाशन कीन्हो। हृदय हर्ष भल भावन भीनो॥

दो. मैं जस कहउँ विदेह सुन, करहुँ मुदित मन माहिं।
सुफल मनोरथ होइके, लहिहौं सुयश अथाहिं ॥३५॥

जो मम धनुष धरा गृह माहीं। जेहिं उठाय सिय शक्ति सोहाहीं॥
तेहिं कहँ जो जन भंजै कोई। बिन विचार सिय पावहिं सोई॥
अस प्रण करहु त्यागि सब सोचा। समाचार नृप पावहिं रोचा॥
अस कहि भे शिव अंतर ध्याना। जागि जनक अतिशय सुखमाना॥
महती सभा कीन्ह हर्षाई। सिय विवाह की बात चलाई॥
बहुरि सुनायो शम्भु निदेशा। सुनि सुख लहे किये उपदेशा॥
ऐसहिं करहु सत्य नरनाहा। विप्र साधु गुरू सचिवहुँ चाहा॥
पाइ सुसम्मति जनकं भुआला। कीन्हेउ प्रणहिं मुदित तेहिं काला॥

दो. देश देश पठयो खबरि, यथा यज्ञ धनु भंग।
रंग भूमि रचना रची, छायो पुरहिं उमंग ॥३६॥

ऋषि मुनियन आमंत्रित कीन्हें। स्वागत साज साजि सब लीन्हे॥
गाधि तनय पहँ विप्र पठाई। भूपति करि बहु विनय बोलाई॥
यज्ञारंभ जानि सब भूपा। द्वीप द्वीप के सुभग स्वरूपा॥
आवन लागे वीर बाँकुरे। सियहिं लहन करि आस आतुरे॥
पाइ नृपति ते बहु सतकारा। मिथिला वसे राज परिवारा॥
धनुष देखि कोऊ फिरि जावै। कोउ कोउ बल अपनो अजमावै॥
विविध रूप धरि असुरहुँ आवत। देखि चाप सब गर्व गमावत॥
यहि विधि वार्षिक यज्ञ विधाना। चलत रहेउ करि आस महाना॥

छन्द –

करि आस महती यज्ञ महँ। नृप कुँवर आवत पुर फवै॥
लखि धनुष संशय शोक सनि। वस नगर लालच में सबै॥
ऋषि मुनिहुँ आये हर्ष हिय। सतकार भूपति ते लहैं॥
मुनि गाधितनयहु पहुँचि तहँ। सँग राम लछिमन शिष अहैं॥७॥

सो. उतरे उपवन आय, नृप विदेह सुधि पाइ के।
सजिके विविध बनाव, चले लेन सब कहँ लिये॥३७क॥

दो. सीता जन्म प्रकाश को, किय संक्षेप प्रकास।
दास रामहर्षण हृदय, बिनु विज्ञान उजास॥३७ख॥
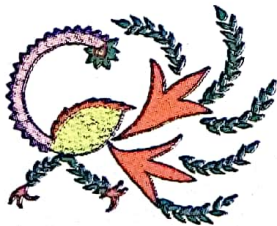
॥ अलम् ॥
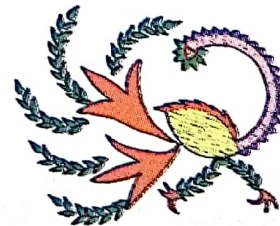
श्री जी का वैभव

- संसारी जीवों को भगवत्-प्राप्ति, श्री जी को पुरुषाकार रूप में वरण करने से होती है।
- भगवान भी श्री जी के पुरुषाकारत्व की अपेक्षा रखते हैं।
- श्री जी के कृपा-कटाक्ष-बिना जीव को भौतिक ऐश्वर्य, आत्म दर्शन और भगवत्-प्राप्ति स्वप्न में भी संभव नहीं होती।
- महा महिम्न भगवान की महिमा श्री-पतित्व पद में प्रतिष्ठित होने से ही है।
- श्री जी सर्व श्रेयस्करी सर्वेश्वरी हैं।
- श्री जी ही सबकी धारक और पोषक हैं।
- श्री जी उद्भव, स्थिति और संहार करने वाली अनन्त ब्रह्माण्डों की नायिका हैं।
- भगवान की यावत-लीला है वह सबकी सब यथार्थ में श्री जी की लीला है।
- भगवान के पारतन्त्र्य और अनन्यार्हत्व की अत्यन्त अपेक्षा श्री जी में है जिसके बल से भगवान से प्रार्थना एवं पुरुषाकार कर करके कृपामई सम्पूर्ण जीवों के कल्याण में सदा संलग्न रहा करती हैं।
- श्री जी जगज्जननी हैं, अस्तु जीवों के लिये अनन्त माताओं का प्यार उनके हृदय में समाहित है।
- श्री जी की शक्ति के बिना अग्नि, पवन, जल अपने स्वभाव का नाम मात्र प्रभाव-प्रकाशन नहीं कर सकते, पृथ्वी में स्थैर्य और क्षमा तथा आकाश में अनन्त अवकाश और महानता श्री जी की इच्छा शक्ति से ही है।

श्री आचार्य महाप्रभु के उपदेशामृत ग्रंथ ''श्री जी का वैभव'' से संकलित

आचार्य श्री स्वामिपाद श्रीमद् रामहर्षण दास जी
महाराज की पूज्या माता जी

अनंत श्री विभूषित
स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज का
अनमोल भक्ति साहित्य

1. वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र व्याख्या)
2. श्री प्रेम रामायण (चतुर्थ संस्करण) सजिल्द
3. औपनिषद ब्रह्मबोध
4. गीता ज्ञान
5. रस चन्द्रिका
6. प्रपत्ति–प्रभा स्तोत्र
7. विशुध्द ब्रह्मबोध
8. ध्यान वल्लरी
9. सिध्दी स्वरूप वैभव (द्वितीय संस्करण)
10. सिध्दी सदन की अष्टमीय सेवा
11. लीला सुधा सिन्धु (द्वितीय संस्करण)
12. चिदाकाश की चिन्मयी लीला
13. वैष्णवीय विज्ञान
14. विरह वल्लरी
15. प्रेम विल्लरी
16. विनय वल्लरी
17. पंच शतक
18. वैदेही दर्शन
19. मिथिला माधुरी
20. हर्षण सतसई
21. उपदेशामृत
22. आत्म विश्लेषण
23. रामराज्य
24. सीताराम विवाहाष्टकम्
25. प्रपत्ति दर्शन
26. सीता जन्म प्रकाश
27. लीला विलास
28. प्रेम प्रभा
29. श्री लक्ष्मी निधि निकुंज की अष्टमीय सेवा
30. आत्म रामायण

प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज, नयाघाट,परिक्रमा मार्ग, श्री अयोध्या, जिला–साकेत (उ.प्र.) 224123
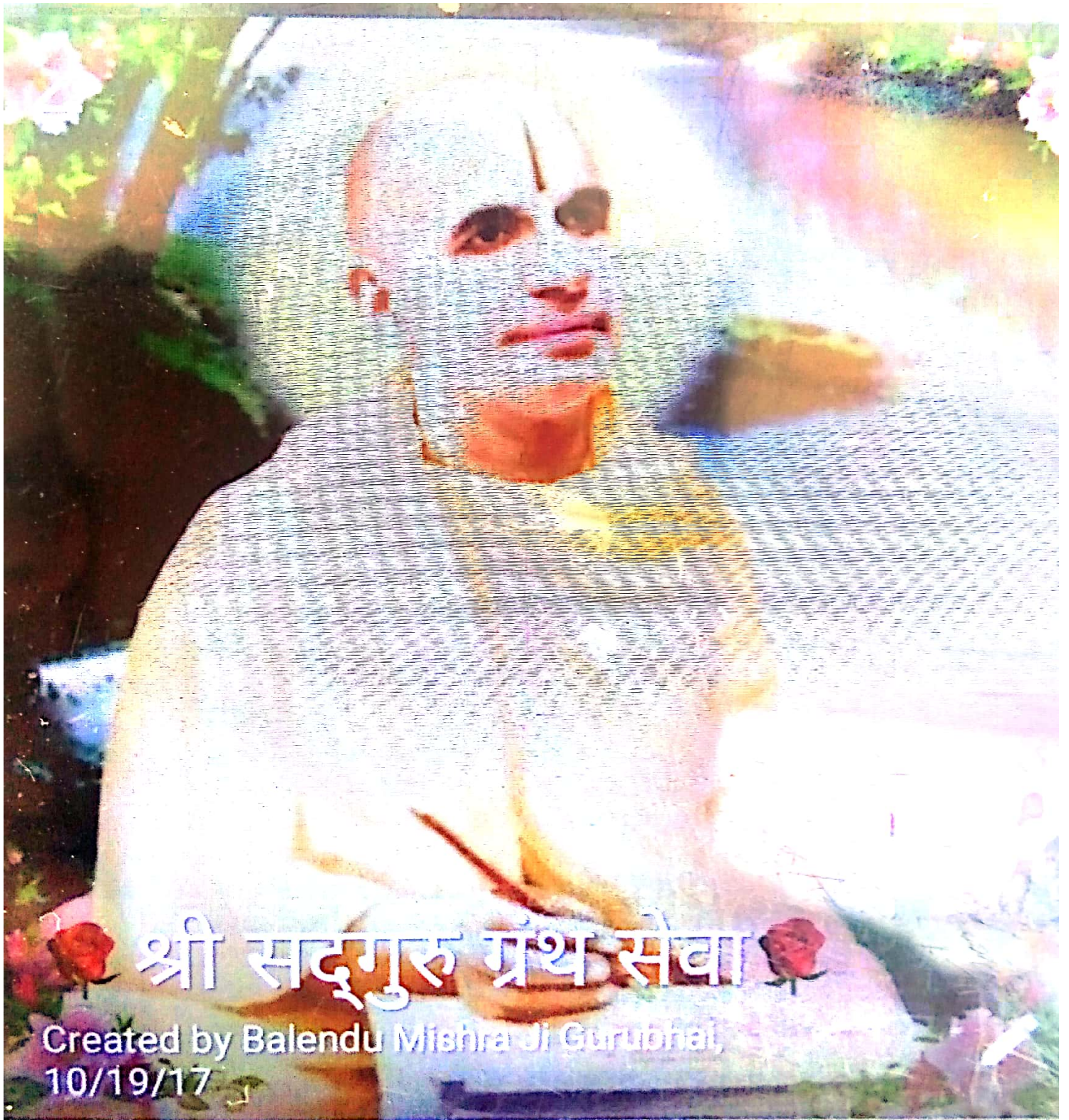
Description

"श्री सद्गुरु ग्रंथ सेवा" ग्रुप अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री मद्रामहर्षण दास जी महाराज के द्वारा लिखित ग्रंथो पर आधारित सेवा ग्रुप है। जिसमे सिर्फ सरकार जी द्वारा लिखित ग्रंथों... Read more